

# भास्कर

दैनिक भास्कर | भोपाल | मंगलवार 29 जनवरी, 2008

चित्रकार सैयद हैदर शहर में

## ‘मैं किसी विवाद में पड़ना नहीं चाहता’

सिटी रिपोर्टर, भोपाल

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार सैयद हैदर सोमवार को शहर में थे। रंगों के पर्याय बन चुके रजा, लगभग हर साल पेरिस से भोपाल आते हैं और अपनी जन्मभूमि दमाह (अपने गांव वाबरिया) भी जाते हैं। रजा बीते तीस सालों से जब-जब यहां आए, चित्रकारों पर अपना आशीर्वाद लुटा कर गए। इस बार भी वह रंगायन गैलरी और भारत भवन के बुलावे पर यहां आए हैं और नए-पुराने चित्रकारों-शिल्पकारों के काम की एकजीविशन ‘पयूजन’ को उद्घाटित करेंगे। इसके बाद गांव जाकर गुरु वेनीप्रसाद स्थापक का स्मारक बनाएंगे।

वरिष्ठ चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन का जिक्र करने पर उनकी दो-टूक टिप्पणी है- हुसैन सिग्निफिकेंट आर्टिस्ट हैं। अफसोस है, हुसैन विदेश में है। लोगों द्वारा उनके काम के विरोध पर रजा साफ-साफ कहते हैं, ‘मैं किसी कंट्रोवर्सी में नहीं पड़ना चाहता, आप इसे मेरी चालाकी भी कह सकते हैं पर मैं किसी झगड़े में क्यों पड़ूँ?’

अपनी ‘बिंदु’ सीरिज से पहचाने जाने वाले रजा ने प्रकृति-पुरुष, शांति बिंदु, ओम और सबको सन्मति दे भगवान... जैसी सीरिज पर भी काम किया है। उनका कहना है, किसी भी मजहब ने आपस में बैर नहीं करना नहीं सिखाया। जो 12 वीं सदी में हुआ उसे 21 वीं सदी में दोहराने से क्या फायदा? मैंने अपना मजहब नहीं छोड़ा, लेकिन मैं मंदिर भी जाता हूँ और गिरिजाघर भी।

नए चित्रकारों को उनकी सलाह है, स्लो एंड स्टडी विन्स द रेस। उनके कहने के मायने हैं कि ‘जल्दी-जल्दी काम न करें। न ही कीमत के पीछे भागें। अपना दाम बढ़ाने की जरूरत नहीं, जो कम समय में ज्यादा दाम पा रहे हैं उन्हें आगे नुकसान होगा।’

दो-टूक...



देखिए, ऐसा है कि...



इसे भी मानें...

